RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015–17

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्षः 45, अंक : 12 एक प्रति 2 : रुपये

कुल पृष्ठ : 8

रविवार 14 जून, 2020

विक्रमी सम्वत् 2077, सृष्टि सम्वत् 1960853121

दयानन्दाब्द : 196 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये

आजीवन शुल्क : 1000 रुपये

दूरभाष : 0181-2292926, 5062726

E-mail: apspunjab2010@gmail.com,

www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–45, अंक : 12, 11-14 जून 2020 तदनुसार 1 आषाढ़, सम्वत् 2077 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के आह्वान पर घर-घर यज्ञ, हर घर यज्ञ का आयोजन दिनांक 3 मई 2020 को किया गया था। इस अवसर पर पंजाब की समस्त आर्य समाजों में और आर्य समाज के सदस्यों द्वारा अपने अपने घरों में यज्ञ किया गया। इस वैश्विक महामारी के समय में अनादि वैदिक परम्परा द्वारा पर्यावरण शुद्धि, आत्म कल्याण एवं विश्व कल्याण के लिये लाखों लोगों ने एक साथ यज्ञ करके नया इतिहास रच दिया। आर्यजनों द्वारा भेजे गये चित्रों को साप्ताहिक आर्य मर्यादा में क्रमशः प्रकाशित किया जा रहा है। इस अंक के लिए आर्य जनों द्वारा भेजे गये चित्र निम्न प्रकार से हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के मंत्री श्री विनोद भारद्वाज एवं श्रीमती मीना भारद्वाज जी अपने निवास स्थान पर यज्ञ करते हुए। सभा मंत्री श्री विजय साथी जी अपने निवास स्थान पर यज्ञ करते हुये। श्री एस.एम.शर्मा जी लुधियाना अपने परिवार के साथ घर में यज्ञ करते हुए।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के अन्तरंग सदस्य श्री वेद आर्य जी परिवार सहित अपने निवास स्थान पर यज्ञ करते हुए। सभा मंत्री श्री विपिन शर्मा जी अपने निवास स्थान पर यज्ञ करते हुये। श्री राजेन्द्र कौड़ा जी रायकोट अपने परिवार के साथ घर में यज्ञ करते हुए।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के मंत्री श्री भारत भूषण जी मेनन अपने माता-पिता के साथ अपने निवास स्थान पर यज्ञ करते हुए। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अन्तरंग सदस्य श्री ललित बजाज जी कोटकपूरा में अपने निवास स्थान पर यज्ञ करते हुये। आर्य समाज गिद्दड़वाहा जिला मुक्तसर के पुरोहित जी यज्ञ करते हुए।

वैदिक धर्म ही क्यों?

ले.-शिवनारायण उपाध्याय, दादाबाडी, कोटा (राज.)

19वीं सदी के प्रारम्भ में बर्लिन में वैज्ञानिकों की एक कान्फ्रेन्स हुई थी। बैठक के बाद वैज्ञानिकों ने गम्भीर चिन्तन मनन के उपरान्त घोषणा की कि अब तक समाज का पथ प्रदर्शन धर्म (Religion) करता आ रहा है परन्तु अब उसे यह कार्य विज्ञान के लिये छोड़ देना चाहिये। यह घोषणा करते समय वैज्ञानिकों के मन एवं मस्तिष्क पर Judaic मतों यहूदी, ईसाई तथा इस्लाम का कबीलाई रूप छाया हुआ था जिसने विगत 2000 वर्षो से विश्व भर में धर्म के नाम पर असंख्य हत्यायें, बलात्कार, आगजनी आदि का तांडव नृत्य नाचा था। वास्तव में धर्म एवं Religion शब्द Latin भाषा के Religare शब्द से बना है जिसका अर्थ है, मैं अपने को अपने ईश्वर के साथ बांधता हूँ। The concise oxford dictionary के अनुसार। Shall bind myself to my God "purticular system of faith and worship, thing that one is devoted to or bound to" धर्म में एक पैगम्बर, पुत्र अथवा अवतार का होना आवश्यक है। God भी इनके समूह के लिये ही होता है। विशेष धार्मिक क्रियाएं करनी भी आवश्यक होती हैं। कुर्आन मजीद में कहा गया है, 'खुदा ने आदम, इब्राहीम, नूह के खानदान और इम्रान के खानदान को तमाम दुनिया के लोगों में से चुन लिया था। कुर्आन आले इम्रान 3 आयत 32.33 तौरेत में मूसा कहते हैं: 'यदि तुमने अपने ईश्वर की आज्ञा की पालना नहीं की तो तुम्हें भी दूसरे राष्ट्रों की तरह नष्ट कर दिया जायेगा।' बाईबिल में कहा है 'वे लोग जो बाईबिल के ईश्वर के अतिरिक्त दूसरे देवताओं की पूजा करते हैं मेरे क्रोध से नहीं बच सकते।' अपना मत स्वीकार करने के लिए ईसा मसीह प्रलोभन भी देते हैं', 'न्याय के दिन ईसा भेड़ों (ईसाईयों) और बकरों (अन्य मतावलम्बियों) को अलग अलग बांट लेगा। भेड़ों को जन्नत में और बकरों को दोज़ख में (सदैव जलती हुई आग में) भेज देगा।' तौरेत में कहा है, 'यदि तुम केवल मेरी आज्ञा का पालन करोगे तो पृथ्वी में जो भी उत्तम खाद्य पदार्थ उत्पन्न होते हैं वे सब तुमको खाने को मिलेंगे। हदीस कहते है, न्याय के दिन मुसलमानों के गुनाहों को खुदा छिपा लेगा तथा उन्हें नेकियों का फल देगा। युद्ध में खुदा यहूदियों एवं मुसलमानों को सहायता देता है। तौरेत या प. 14 आयत 14-16 में कहा गया है।'परमेश्वर तुम्हारे लिए युद्ध करेगा। इजराइल के सन्तान से कहो कि वे आगे बढ़ें। तू अपनी छड़ी उठा और समुद्र पर अपना हाथ बढ़ा और उसके दो भाग कर और इजराइल के सन्तान समुद्र के बीचों बीच से सूखी भूमि में होकर चले जायेंगे।'

विज्ञान के विरोधी-इटली निवासी ब्रूनो को सन् 1600 ई. में ईसाई संघ द्वारा इसलिए जीवित जला दिया क्योंकि वह इस बात पर जोर देता था कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है। कोपरनिकस के ढ़ाँचे को तो मृत्यु के कई वर्ष बाद कब्र से निकाल कर फांसी दी गई थी। गैलीलियों को भी धमकी दी थी वह ब्रूनों की तरह बहादुर नहीं था। उसने अपनी राय वापस लेने में ही खैर समझी। फिर भी उसे 9 वर्ष तक नजरबन्द रहना पड़ा। प्रोटेस्टेण्ड मत का प्रणेता मार्टिन लूथर विज्ञान का घोर विरोधी था। कोपरनिकस की खोज कि पृथ्वी अपनी कीली पर घूमती हुई सूर्य की परिक्रमा करती है, का विरोध करते हुए उसने कहा, 'लोग एक नवीन अधकचरे नभ वैज्ञानिक की बात पर ध्यान देने लगे हैं जो कहता है कि पृथ्वी घूमती है सूर्य और तारे नहीं। जो कोई अधिक बुद्धिमान बनता है वह स्वयं एक ऐसी नवीन सर्वश्रेष्ठ आकाशीय पिण्डों की स्थापना क्यों नहीं कर देता?

बेहोश करने वाली दवाईयों को खासकर बच्चे के जन्म के समय महिलाओं को देने का पादरियों ने विरोध किया और उसे धर्म के विरूद्ध बताया। सन् 1951 में एक स्काटिश महिला मेकेनिल ने बच्चे को जन्म देने से पूर्व कष्ट कम करने हेतु ऐसी दवा को काम में लिया तो उसे जिन्दा जला दिया गया। सिम्पसन चालाक था। उसने जब क्लोरोफार्म की खोज की तो उसका विरोध हुआ। उसने कहा कि परमेश्वर ने जब आदम की एक पसली निकाली थी तब उसे पहले बेहोश किया था अत: पुरूषों पर इसका प्रयोग किया जा सकता है। उसकी बात स्वीकार कर ली गई।

दास प्रथा के समर्थक-इन तीनों ही धर्मों के अनुयायियों ने मनुष्यों को शाक-भाजी की तरह खरीदा और बेचा है। अरब राष्ट्रों में आज भी मनुष्यों को खरीदा और बेचा जाता है। जब जर्मनी में दास प्रथा समाप्त करने के लिए आन्दोलन चलाया तो हजारों किसानों को जिन्दा जला दिया गया था। इस समय मार्टिन लूथर ने कहा, किसानों की यह मांग गलत है कि गुलामी प्रथा तोड़ दी जावे। असम्भव। पृथ्वी पर कोई ऐसा राज्य नहीं जिसमें सब व्यक्ति बराबर हों। कुछ को स्वतंत्र दूसरों को गुलाम कुछ को राजा और दूसरों को प्रजा रहना ही पड़ेगा। इसलिए जो लोग ऐसा कर सकते है उनको खुल्लम या छिपकर काट डालें।

तीनों ही मत, जिन्दा, भूत, प्रेत, डाकिन आदि पर विश्वास रखते हैं यूरोप में पिछली सदी तक हजारों वृद्ध महिलाओं को डाकिन मानकर मौत की सजा दी गई है। इंग्लैण्ड में 16वीं सदी में इसके लिए अलग से एक विभाग खोला गया था और उसका अध्यक्ष प्रसिद्ध वैज्ञानिक फ्रांसिस बेकन था।

अकृतज्ञता-इस्लाम में काफिरों द्वारा उन पर किये गये उपकारों को नहीं स्वीकारा जाता है। इस विषय में एक कथा है। हनीफ के युद्ध में जब लूट का माल इकट्ठा हो रहा था तब एक डोली जाती हुई दिखी। रबिया इब्नेर की ने उसका पीछा कर उसे पकड़ा उसमें एक वृद्ध पुरूष बैठा था।

रबिया ने जाते ही उस पर तलवार का वार किया। आश्चर्य है कि वृद्ध को चोट नहीं लगी और तलवार टूट गई। वृद्ध पुरूष ने हंस कर कहा, बेटे तेरे माँ-बाप ने तुझे अच्छी तलवार नहीं दी। जा मेरी काठी में जो तलवार लटक रही है उसे ले आ और अपना काम कर। रबिया ने ऐसा ही किया जब वह वार करने लगा तो वृद्ध पुरूष ने कहा, 'अपनी मां से यह अवश्य कह देना कि मैं दुरेव इब्ने सुम्मा को मार आया हूँ।' रबिया ने कहा, 'अच्छा कह दूंगा।' और उसने उसे कत्ल कर दिया। वह उसका कटा सिर घर पर लाया और अपनी मां को समाचार सुनाया। मां ने सुनकर कहा, 'अरे दुष्ट! जिसे तूने मारा है उसने तीन बार मेरी और तेरी दादी की इज्जत बचाई है।' रबिया ने मुंह फेर कर कहा, 'इस्लाम काफिर के एहसान और गुणों को नहीं मानता है।'

वैदिक धर्म की सोच इनसे एक दम विपरीत है। वैदिक धर्म एक शाश्वत सार्वभौमिक धर्म है इस धर्म का संस्थापक न कोई पैगम्बर है और न कोई अवतार ही है। यह तो सृष्टि उत्पत्ति के साथ ही प्रारम्भ हुआ है! इसके ईश्वर सभी के माता-पिता के समान है-**त्वं हि न: पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ। ऋग्वेद 8.98.11** हे सबको निवास देने वाले सैकड़ों कर्मों को करने वाले परमात्मा आप ही हमारे पिता और माता है इसी प्रकार यजुर्वेद 31.10 में कहा है-**स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा।।** वह संसार की रचना करने वाला ज्ञान का सागर सभी लोक-लोकान्तरों को जानता है वही हमारा माता-पिता और बन्धु है। वेद का धर्म कबिलाई धर्म नहीं है इसलिए उसमें किसी को छोटा और किसी को बड़ा नहीं माना गया है। मनुष्य मात्र को बराबर माना गया है। ऋग्वेद में कहा गया है-**अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते सं भ्रातरो वावृधु सौभगाय:।** मनुष्यों में कोई बड़ा नहीं है और न कोई छोटा ही है। यह सब भाई-भाई है। सब मिलकर भविष्य उज्ज्वल करने के लिए आगे बढ़े यहां दासत्व का प्रश्न ही पैदा नहीं होता है। वेद में विज्ञान का किसी भी स्तर पर विरोध नहीं हुआ है। स्वामी दयानन्द सरस्वती वेद विषय विचार अध्याय में ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में लिखते है-वेदों में अवयव रूप विषय तो अनेक है परन्तु उनमें ये चार मुख्य है-(1) एक विज्ञान अर्थात् सब पदार्थो को यथार्थ रूप में जानना (2) दूसरा कर्म (3) तीसरा उपासना और (4) चौथा ज्ञान है। विज्ञान उसको कहते हैं कि जो कर्म, उपासना और ज्ञान इन तीनों से यथावत् उपयोग लेना और परमेश्वर से लेकर तृण पर्यन्त पदार्थों का साक्षात् बोध का होना उनसे यथावत् योग का करना इससे यह विषय इन चारों में भी प्रमुख है। क्योंकि इसी से वेदों का मुख्य तात्पर्य है। सो भी दो प्रकार का है-एक तो परमेश्वर का यथावत् ज्ञान और उसकी आज्ञा का बराबर पालन करना और दूसरा यह है कि उसके रचे हुए सब पदार्थों के गुणों का यथावत् विचार कर उनसे कार्य सिद्ध करना अर्थात् ईश्वर ने कौन-कौन पदार्थ

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय

पर्यावरण संरक्षण के प्रति सराहनीय योगदान

5 जून को पूरे विश्व में पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने सभा के साथ सम्बन्धित सभी आर्य समाजों से आह्वान किया था कि इस दिन सभी आर्य समाजें अपने निकटवर्ती पार्कों में यज्ञ करें और एक वृक्ष अवश्य लगाएं। सभा से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों ने इसमें अपना अमूल्य योगदान दिया। 5 जून को पूरे पंजाब में जगह-जगह पार्कों में आर्यजनों के द्वारा यज्ञ किया गया और साथ ही पर्यावरण को साफ रखने के लिए पौधारोपण भी किया।

आज विश्व का सर्वाधिक चर्चित और चिन्तनीय विषय पर्यावरण है। वृक्षों के अन्धाधुन्ध कटान से पर्यावरण की समस्या लगातार बढ़ती जा रही है। जल का दुरूपयोग दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है। प्राकृतिक पदार्थो का दोहन मानव के द्वारा किया जा रहा है। मनुष्य अपने स्वार्थ के लिए प्राकृतिक पदार्थों वृक्ष, जल, वायु आदि का संरक्षण करने के बजाय उसको नष्ट करने में लगा हुआ है। विकास के नाम पर प्रकृति का दोहन किया जा रहा है, जिसके परिणामस्वरूप बाढ़, भूकम्प, अतिवृष्टि, अनावृष्टि आदि प्राकृतिक प्रकोप देखने को मिल रहे है। अंधाधुध गाड़ियों, कारखानों से निकलने वाले धुएं से पर्यावरण दिन-प्रतिदिन प्रदूषित हो रहा है। इस समस्या के समाधान के लिए किसी के पास कोई उपाय नहीं है। पर्यावरण के घटक तत्व हैं वायु, जल, भूमि, वृक्ष-वनस्पतियाँ। अथर्ववेद में सर्वप्रथम जल-वायु के अतिरिक्त औषधियों या वृक्ष वनस्पतियों को पर्यावरण का घटक तत्व बताया गया है। वेद में इन तत्वों को छन्दस् कहा गया है। छन्दस् का अर्थ है-आवरक या पर्यावरण। अथर्ववेद का कथन है कि जल-वायु और वृक्ष वनस्पति ये पर्यावरण के घटक तत्व हैं और ये प्रत्येक लोक में जीवनी शक्ति के लिए अनिवार्य हैं, यदि ये नहीं होंगे तो मानव का जीवित रहना सम्भव नहीं है। इन तत्वों के प्रदूषण या विनाशन से पर्यावरण प्रदूषण होता है। आज विश्वभर में भूमि, जलवायु आदि सबको अत्यधिक मात्रा में प्रदूषित किया जा रहा है। यांत्रिक उपकरण इस समस्या को और बढ़ा रहे हैं। जीवनी शक्ति प्राणतत्व या आक्सीजन के एकमात्र स्रोत वृक्ष वनस्पतियों को निर्दयतापूर्वक काटा जा रहा है। यदि वृक्ष नहीं होंगे तो मनुष्य को ऑक्सीजन नहीं मिल पाएगा और वह जीवित नहीं रह सकेगा। वैदिक ऋषियों ने पर्यावरण प्रदूषण को रोकने के लिए जलवायु और वृक्ष वनस्पतियों को प्रमुख साधन बताया है।

वेदों में वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, द्यु-भू अर्थात् भूमि और द्युलोक के संरक्षण की बात अनेक मन्त्रों में कही गई है। साथ ही वृक्ष वनस्पतियों के संरक्षण का आदेश दिया गया है। वेदों में वायु को अमृत कहा गया है। वायु जीवनीशक्ति देता है। इसको भेषज या औषधि कहा गया है। यह प्राणशक्ति देता है और अपानशक्ति के द्वारा सभी दोषों को बाहर निकालता है। ऋग्वेद में कहा गया है कि हम ऐसा कोई काम न करें, जिससे वायुरूपी अमृत की कमी हो। यदि हम प्राणवायु को कम करते हैं तो अपने लिए मृत्यु का संकट तैयार करते हैं। ऋग्वेद में मन्त्र आया है कि-

वात आ वातु भेषजं शंभु मयोभु नो हृदे। प्र ण आयूँषि तारिषत्।।
उत वात पितासि न उत भ्रातोत नः सखा। स नो जीवातवे कृधि।।
यददो वात ते गृहे अमृतस्य निधिर्हितः। ततो नो देहि जीवसे।।

अर्थात् वायु हमारे हृदय के स्वास्थ्य के लिए कल्याणकारक आरोग्य कर औषधि को प्राप्त कराता है और हमारी आयु को बढ़ाता है। यह वायु हमारा पितृवत् पालक, बन्धुवत् धारक, पोषक और मित्रवत् सुखकर्ता है और हमें जीवन वाला करता है। इस वायु के घर अन्तरिक्ष में जो अमरता का निक्षेप भगवान द्वारा स्थापित है, उससे यह वायु हमारे जीवन के लिए जीवनतत्त्व प्रदान करता है। अथर्ववेद में मन्त्र आता है कि-

आ वात वाहि भेषजं वि वात वाहि यद् रपः।
त्वं हि विश्वभेषज देवानां दूत ईयसे

अर्थात् वायु के संचार से शरीर का मल निकलकर स्वास्थ्य मिलता है और तार, विमान, ताप , वृष्टि आदि का संचार होता है।

द्यु में सूर्य और अन्तरिक्ष आते हैं तथा भू में भूमि या पृथिवी। सूर्य ऊर्जा का स्रोत है, अंतरिक्ष वृष्टि करता है और पृथिवी ऊर्जा और वृष्टि का उपयोग करके मानवमात्र को अन्नादि देकर मानव जीवन को संचालित करती है। इस प्रकार द्यु-अन्तरिक्ष और भू ये तीनों परस्पर सम्बद्ध हैं। पृथिवी जल अग्नि या सूर्य समन्वित रूप में मानव जीवन का संचालन कर रहे हैं। यह संतुलन जब बिगडता है, तब विनाश की प्रक्रिया शुरू होती है। अत: वेदों में इनके संतुलन को सुरक्षित रखने के लिए आदेश दिए गए हैं। अनेक मन्त्रों में कहा गया है कि द्युलोक, अन्तरिक्ष और भूलोक को सभी प्रकार के प्रदूषणों से बचावें। अथर्ववेद में विशेष रूप से कहा गया है कि भूमि के मर्मस्थानों को क्षति न पहुँचावे। ऐसा करने से जल के स्रोत आदि नष्ट होते हैं और भूस्खलन तथा भूकंप आदि की संभावना बढ़ती है।

वेदों में जल की उपयोगिता और उसके महत्व पर बहुत बल दिया है। जल जीवन है, अमृत है, भेषज है, रोगनाशक है और आयुवर्धक है। जल को दूषित करना पाप माना गया है। जल के विषय में कहा गया है कि जल से सभी रोग नष्ट होते हैं। जल सर्वोत्तम वैद्य है। जल हृदय के रोगों को भी दूर करता है। जल को ईश्वरीय वरदान माना गया है। अनेक मन्त्रों में जल को दूषित न करने का आदेश दिया गया है। जल और वृक्ष वनस्पतियों को कभी हानि न पहुँचावें। पुराणों में तो यहाँ तक कहा गया है कि नदी के किनारे या नदी में जो थूकता है, मूत्र करता है या शौच आदि करता है, वह नरक में जाता है और उसे ब्रह्महत्या का पाप लगता है। ऋग्वेद में कहा गया है कि-

अप्स्वन्तरमृतमप्सु भेषजमपामुत प्रशस्तये। देवा भवत वाजिनः।।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी इस मन्त्र का भाष्य करते हुए लिखते हैं कि हे विद्वानों! तुम अपनी उत्तमता के लिए जलों के भीतर जो मार ड़ालने वाला, रोग का निवारण करने वाला अमृतरूप रस तथा जलों में औषध हैं उनको जानकर उन जलों की क्रियाकुशलता से उत्तम श्रेष्ठ ज्ञान वाले हो जाओ। यजुर्वेद के छठें अध्याय के 22वें मन्त्र में कहा गया है कि मापो हिंसीः अर्थात् जल को नष्ट मत करो।

वेदों और ब्राह्मण ग्रन्थों में वृक्ष वनस्पतियों का बहुत ही महत्त्व वर्णन किया गया है। वृक्ष वनस्पति मनुष्य को जीवनी शक्ति देते हैं और उसका रक्षण करते हैं। औषधियाँ प्रदूषण को नष्ट करने का प्रमुख साधन हैं। इसलिए उन्हें विषदूषणी कहा गया है। वेद में वृक्षों को पशुपति या शिव कहा गया है। ये संसार के विष कार्बनडाईआक्साईड को पीते हैं और इस प्रकार ये शिव के तुल्य विषपान करती हैं और प्राणवायु या ऑक्सीजनरूपी अमृत देती हैं। अतः वृक्षों को शिव का मूर्तरूप समझना चाहिए। इसी आधार पर ऋग्वेद में वृक्षों को लगाने का आदेश है। ये जल के स्रोतों की रक्षा करते हैं। एक मन्त्र में कहा गया है कि वृक्ष प्रदूषण को नष्ट करते हैं, अतः उनकी रक्षा करनी चाहिए।

मैं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों का हार्दिक धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने सभा के आह्वान पर अपनी जागरूकता का परिचय देते हुए पर्यावरण के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन किया। यह हम सभी का कर्त्तव्य है कि लोगों को पर्यावरण की सुरक्षा के प्रति जागरूक बनाएं। शिक्षण संस्थाओं में पढ़ने वाले बच्चों को जल व्यर्थ न गंवाने की प्रेरणा दें। अगर हम भविष्य में इंसान को सुरक्षित देखना चाहते हैं तो हमें स्वयं भी जागना होगा और दूसरों को भी जगाना होगा। पर्यावरण की समस्या को खत्म करने के लिए हमें वैदिक चिन्तन को आधार बना कर कार्य करना होगा। वेदों के अनुसार यदि हम वनस्पतियों, ओषधियों, वृक्षों तथा जल और वायु का संरक्षण करते हैं तो इस समस्या से छुटकारा पाया जा सकता है। इनका संरक्षण न होने के कारण ही आज प्रदूषण की समस्या फैलती जा रही है, जल दूषित हो रहा है, शुद्ध वायु नहीं मिल रही है जिससे अनेक प्रकार की बीमारियां बढती जा रही हैं।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

नदिया कैसे उतरें पार

ले.-पं. वेदप्रकाश शास्त्री, शास्त्री भवन, 4-E, कैलाशनगर, फाजिलका, पंजाब

श्रीराम का वनगमन सर्वप्रसिद्ध है। कहते हैं जब श्रीराम गंगातट पर पहुंचे और केवट से नौका द्वारा पार उतारने के लिए कहा। आगे का वर्णन अत्यन्त मनोहारी होने से "श्री रामचरित मानस, अयोध्या काण्ड" से महात्मा तुलसीदास के शब्दों में ही प्रस्तुत करना अनुचित न होगा।

बरबस राम सुमंत्रु पठाए। सुरसरि तीर आयु तब आए।।
मांगी नाव न केवटु आना। कहइ तुम्हार मरमु मैं जाना।।
चरन कमल रज कहुं सब कहई। मानुष करनि मूरि कछु अहई।।
छुअत सिला भई नारि सुहाई। पाहन ते न काठ कठिनाई।।
तरनिउ मुनि धरिनी होइ जाई। बाट परइ मोरि नाव उड़ाई।।
एहिं प्रतिपालउँ सबु परिवारु। नहि जानउँ कछु अउर कबारु।।
जौं प्रभु पार अवसि गा चहहू। मोहि पद पदुम पखारन कहहू।।
कृपा सिंधु बोले मुसकाई। सोई करु जेहि तव नाव न जाई।।
बेगि आनु जल पाय पखारु। होत बिलंबु उतारहि पारु।।
केवट राम रजायसु पावा। पानि कठवता मारे लेइ आवा।।
अति आनन्द उमगि अनुरागा। चरन सरोज पखारन लागा।।
पद पखारि जलु पान करि आपु सहित परिवार।
पितर पारु कारे प्रभुहिं पुनि मुदित गयउ लेइ पार।।
उतरि ठाढ़ मरु सुरसरि रेता। सीय राम गुह लखन समेता।।
केवट उतरि दंडवत कीन्हा। प्रभुहि सकुच रुहि नहि कछु दीन्हा।।
पिय हिय की सिय जाननिहारी। मनि मुंदरी मन मुदित उतारी।।
कहेउ कृपाल लेहि उतराई। केवट चरन गहे अकुलाई।।
नाथ आज मैं काह न पावा। मिटे दोष दुख दारिद दावा।।
बहुत काल मैं कीन्हि मजूरी। आज दीन्ह बिधि बनि भलि भूरी।।
फिरती बार मोहिप्नो देवा। सो प्रसादु मैं सिर धरि लेंबा।।
बहुत कीन्ह प्रभु लखन सियं नहि कछु केवटु लेई।
विदा कीन्ह करुनायतन भगति विमल बरु देई।।
श्रीरामचरित मानस अयो. 100-102

इस उद्धरण पर किसी प्रकार की टिप्पणी, व्याख्या की आवश्यकता नहीं। सभी कुछ पूर्णत: स्पष्ट है। केवट की श्रीराम के प्रति असीम श्रद्धा, आस्था, विश्वास, निष्ठा और समर्पण तो है ही साथ ही नौका पर चढ़ाने के बहाने अहल्या के पत्थर बनने का उदाहरण देकर चरण प्रक्षालन का अवसर प्राप्त कर लेना। उसके चातुर्य को भी प्रकट करता है। ऐसा सुअवसर भी अनेक पुण्यकर्मों के पश्चात् ही प्राप्त होता है।

नदी पार करते समय की विभिन्न स्थितियों, परिस्थितियों एवं उनके प्रभाव पर दृष्टिपात करना भी अप्रासंगिक न होगा।

1. एक बार की बात है। गुरु और शिष्य घना जंगल पार करते हुए चले जा रहे थे। मार्ग में नदी आ गई। गुरु शिष्य दोनों नदी पार करना चाहते ही थे कि इतने में ही वहां पर पहले से ही विद्यमान एक नवयुवती उन दोनों से करबद्ध प्रार्थना करने लगी। महात्मन्! मुझे भी नदी के पार उतार दें।

शिष्य ने उस नवयुवती को कन्धे पर बिठाया और नदी पार जाकर उसे उतार दिया और आगे चल पड़ा। गुरु जी साथ थे। कुछ दूर जाकर गुरु जी बोले-"प्रियवर! तुम्हें युवती का स्पर्श नहीं करना चाहिए था। जबकि तुमने उसे कन्धे पर ही बिठा लिया।"

शिष्य का उत्तर था-"गुरुदेव! मैंने तो नदी पार करते ही अपने कन्धे का भार उतार दिया था परन्तु आप तो अभी तक ढो रहे हैं? भला इसमें क्या औचित्य है?" कर भला हो भला।

2. एक गणितशास्त्रवेत्ता सपरिवार जा रहे थे। मार्ग में नदी आ गई। कैसे उतरें? सोचने लगे। विचार आ गया। समस्या हल होती दिखी। उन्होंने एक लम्बी लकड़ी ली। अपनी, पत्नी एवं बच्चों की लम्बाई मापी। तत्पश्चात् स्वयं वहीं लकड़ी लेकर नदी में उतरे। किनारे, बीच में फिर पहले किनारे कई स्थानों पर लकड़ी से गहराई मापी। वापस आए। सभी सदस्यों की लम्बाई का जोड़ करके औसत निकाला। औसत ठीक निकला और कहा-"सभी आसानी से पार उतर जाएंगे।"

पत्नी और बच्चों के सहित गणितज्ञ महोदय नदी पार करने लगे। बीच धारा में पहुंचते ही पत्नी और बच्चे डूब गए। यह देख कर गणितज्ञ महोदय आश्चर्यचकित होकर सोचने लगे। अरे यह क्या हो गया? कारण खोजने लगे। उसी लकड़ी से पुन: गहराई की माप ली। औसत निकाला। हिसाब लगाया। सब कुछ बिल्कुल ठीक था। अनायास ही उनके मुंह से निकल गया-"पानी ज्यों का त्यों, कुनबा डूबा क्यों?"

शेष यथार्थ कारण स्वयं सोचें।

3. एक बार एक वैज्ञानिक, एक दार्शनिक और एक चिकित्सक यात्रा पर निकले। मार्ग में नदी आ गई। नाविक को बुलाया। किराया तय कर लिया। नौका में बैठ गए। सभी अपने-अपने विषय के महारथी थे। समय बिताने के लिए वैज्ञानिक महोदय नाविक से बोले-"भाई! क्या तुमने साईंस पढ़ी है?"

नाविक हैरान होकर बोला-"यह कौन सी बला है? मैंने तो कभी नाम भी नहीं सुना।" यह सुनकर वैज्ञानिक कहने लगा-"नाविक! तुम्हारे जीवन का एक हिस्सा व्यर्थ चला गया।"

अब दार्शनिक महाशय ने प्रश्न किया-

"केवट भाई! क्या दर्शन शास्त्र के बारे में कुछ जानते हो?" नाविक-"ना बाबा ना। यह क्या चीज़ है मैं क्या जानूं?" यह सुनकर दार्शनिक महोदय ने नाविक को समझाते हुए कहा-"फिर तो तुम्हारा आधा जीवन बेकार चला गया।"

इस प्रकार परस्पर वार्तालाप चल ही रहा था कि इसी बीच में धीरे-धीरे नौका बीच धारा में पहुंच गई। लहरें ऊँची-ऊँची उठने लगीं। नाव में पानी भरने लगा। जिससे नौका हिचकोले खाकर डूबने लगी। नाविक ने उन विद्वानों से पूछा-"आप लोगों को तैरना आता है?" सभी का उत्तर था-"नहीं।" केवट कहने लगा-"फिर तो आपकी सारी ज़िन्दगी ही व्यर्थ चली गई। अब तो डूबने के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं।"

वैज्ञानिक, दार्शनिक, चिकित्सक सभी देखते ही देखते डूब गए। केवट ने छलांग लगाई और तैर कर नदी पार कर गया।

4. एक महात्मा जी रेलवे प्लेटफार्म पर रामायण पढ़ रहे थे। उनके पास से ही एक पति-पत्नी का जोड़ा निकला। नवयुवक ने महात्मा जी से पूछा-"भगवन्! यह क्या पढ़ रहे हैं?" महात्मा जी ने उत्तर दिया-"बेटा! रामायण पढ़ रहा हूँ।" नवयुवक-"यह भी कोई पढ़ने की चीज़ है।" यह कहते हुए नवयुवक आगे बढ़ गया।

गाड़ी आ गई। भीड़ अधिक थी। धक्का-मुक्की करते हुए लोग चढ़ने लगे। गाड़ी चल पड़ी। कुछ ही पल बीते थे कि वह नवयुवक चीखने लगा-"मेरी पत्नी रह गयी, मेरी पत्नी रह गयी।"

नवयुवक की चीख पुकार सुनकर वहीं महात्मा जी कहने लगे-"बेटा! यदि तुमने रामायण पढ़ी होती तो आज ऐसी घटना नहीं होती।" उस नवयुवक ने पूछा-"क्या रामायण में यह भी लिखा है?" "हां बेटा! रामायण में यह भी लिखा है। देखो! जब श्री राम, सीता और लक्ष्मण वन में जा रहे थे तो मार्ग में नदी पड़ी। उन्होंने केवट को आवाज़ लगा कर नौका मंगाई। सर्वप्रथम सीता से चढ़ने को कहा, फिर लक्ष्मण को और अन्त में आप स्वयं चढ़े। यदि तुमने रामायण पढ़ी होती तो पहले अपनी पत्नी को चढ़ाते तत्पश्चात् स्वयं चढ़ते। जिससे आज का यह दुर्दिन न देखना पड़ता।"

5. युवक लज्जित था। कोई उत्तर न बन पड़ा। काशी के कुछ धार्मिक व्यक्तियों ने मिलकर कार्यक्रम बनाया। चलो प्रयागराज चलते हैं। किश्ती चलाना जानते थे। अत: नौका द्वारा जाने का निश्चय किया। सायं काल गंगातट पर पहुंच गए। नौका में बैठ गए। चप्पू संभाला। मंगलगान किया और चल पड़े। सारी रात बारी-बारी चप्पू चलाते रहे। प्रात: ब्रह्म मुहूर्त में इधर-उधर देखा और कहने लगे-"प्रयागराज आ गया, प्रयागराज आ गया।" कुछ देर में हल्का धुंधला उजाला हुआ। उनमें से एक बोला-"भई, मुझे तो यह काशी ही लग रही है।" यह सुनकर दूसरे ठहाका मार कर हंस पड़े। रात भर चप्पू चलाई और इसे अभी काशी ही लग रही है। थोड़ी देर में उधर से एक आदमी निकला। एक ने उससे पूछा-"अरे भाई! यह कौन सी जगह है?" उत्तर मिला-"काशी।" सारे भौंचक्के। यह क्या हुआ? सारी रात चप्पू चलाते रहे और फिर भी काशी! वही की वही काशी!! आखिर बात क्या है?

अब तक पूरी तरह दिन निकल आया था। नौका को ध्यान से देखना आरम्भ किया। देखते हुए उनमें से एक बोला-"अरे! यह लंगर तो खोला ही नहीं था। प्रयागराज आता कहां से?" परन्तु अब हाथ मलने के अतिरित्त और कुछ नहीं हो सकता था।

ध्यान रखें जीवन यात्रा प्रारम्भ करने से पूर्व ही भलीभांति देख लें-कहीं अज्ञान की गांठ से बंधा लंगर

(शेष पृष्ठ 7 पर)

आर्य समाज के द्वितीय नियम की वेदमूलकता

ले.-वीरेन्द्र कुमार अलंकार अध्यक्ष, दयानन्द चेयर फॉर वैदिक स्टडीज् एवं अध्यक्ष, संस्कृत विभाग पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

(गतांक से आगे)

5. अजन्मा विशेषण की वेदमूलकत्ता

वेद में ईश्वर को अज कहा गया है-अजो ह्येको जुषाणोऽनुशेते जहात्येनां भुक्त-भोगामजोऽन्यः। (श्वेताश्वतरोपनिषद् 4.5)। अजन्मा अर्थात् ईश्वर का जन्म नहीं हुआ है, इसीलिए उसकी शाश्वत सत्ता है। ईश्वर को सजन्मा मानने से उसे पूर्ण न्यायकारी और सर्वशक्तिमान् नहीं माना जा सकता। शरीर तो ससीम होता है। ससीम में असीम शक्ति और असीम ज्ञान कैसे सम्भव है? असीम में ही असीम शक्ति और असीम ज्ञान हो सकते हैं। इसलिए ईश्वर को अजन्मा माना गया है। ईश्वर स्वयम्भू है। स्वयम्भू का अर्थ है-यः स्वयं भवति स स्वयम्भूरीश्वरः, जो आप से आप ही है, किसी से उत्पन्न नहीं हुआ है, इससे परमात्मा का नाम स्वयम्भू है। यजुर्वेद का यह प्रमाण भी द्रष्टव्य है-प्रजापतिश्चरन्ति गर्भेऽन्तरजायमानो बहुधा विजायते (यजुर्वेद-31.17)। यहाँ स्वामी जी ने अजायमानः का अर्थ किया है-स्वरूपेण अनुत्पन्नः।

6. अनन्त विशेषण की वेदमूलकता-

सजन्मा पदार्थ सान्त ही होता है। अतः अजन्मा होने से ईश्वर अनन्त भी है। अनन्त का अर्थ है-अविद्यमानोऽन्तो नाशो यस्य सः = जिसका अन्त, मृत्यु या नाश नहीं होता वह अनन्त है। अजन्मा होने से उसकी व्यापकता, शक्ति या ज्ञान को सीमाओं में नहीं बांधा जा सकता। इसलिए ऋषि दयानन्द ने अनन्त का अर्थ किया है-न विद्यतेऽन्तोऽवधिर्मर्यादा यस्य तदतन्तं (ब्रह्म)। जिसका जन्म नहीं, शरीर नहीं तो फिर छोटे बड़े, मोटे पतले की सीमा में वह कैसे बंध सकता है। वेद में ईश्वर की अनन्तता का अनेकत्र उल्लेख हुआ है-एतावानस्य महिमाऽतो ज्यायांश्च पूरूषः। पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि। (यजुर्वेद 31.17)। पृथिवीलोक, चन्द्रलोक, बृहस्पतिलोक आदि सभी की सीमाएँ हैं। फिर भी मनुष्य के लिए तो यह ब्रह्माण्ड अनन्त है, पर वह ईश्वर तो ब्रह्माण्ड में क्या, इससे आगे भी ईश्वर ही ईश्वर है। यही कारण है कि वेद ने और उसी आधार पर स्वामी जी ने ईश्वर को अनन्त कहा है। उपनिषद् में ईश्वर को अनन्त कहा गया है-सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म (तैत्तिरीयोपनिषद्-2.1)। वह सूक्ष्म से सूक्ष्म और महान् से महान् है-अणोरणीयान् महतो महीयान् (श्वेताश्वतरोपनिषद् में भी ब्रह्म (2.1)। अथर्ववेद (10.8.12) भी उद्घोष करता है कि अनन्त ब्रह्म सर्वत्र व्यापक है-अनन्तं विततं पुरुत्रा। यजुर्वेद भी कहता है कि अनन्तमन्युदुशदस्य पाजः (33.38)।

7. निर्विकार विशेषण की वेदमूलकता

ईश्वर सदा एकरस है। यास्क ने छः भाव विकारों की चर्चा की है-षड् भावविकारा भवन्ति। ये हैं-1. जायते (उत्पन्न होना), 2. अस्ति (उत्पन्न होते ही किसी भी पदार्थ की सत्ता हो जाती है), 3. विपरिणमते (परिवर्तन उपस्थित होता है), 4. वर्धते (बढ़ता है), 5. अपक्षीयते (क्षीण होता है) और अनन्तः) 6. नश्यति (नष्ट होता है)। उदाहरण के लिए वृक्ष पर विचार कीजिए। उसमें ये छः भावविकार हैं। प्राणी को लीजिए, उसमें भी यही भावविकार हैं। भले ही आत्मा स्वरूपतः शुद्ध है, विकार जीवात्मा के न हों, पर शरीर जीवात्मा के शरीर में होने से ये जीवात्मा भी विकारवान् हो जाता है। जीवात्मा में शारीरिक विकार सम्भव नहीं हैं, शरीर में विकार होते हैं। जीवित शरीर में ऐन्द्रिक विकार व मानस विकार होते हैं, किन्तु ईश्वर तो अजन्मा है। अतः उसमें विकार का प्रश्न ही नहीं है। हाँ, अवतारी मानने पर ईश्वर को निर्विकार नहीं माना जा सकता। इस प्रकार ईश्वर अजन्मा होने से निर्विकार भी स्वतः सिद्ध है। ईश्वर सत्व, रजस्, तमस् से रहित है। इसलिए इनके गुण प्रकाशतत्व, चंचलता व मोह से भी सर्वथा पृथक् है। कर्मविपाक व क्लेश से भी दूर है-क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुषविशेष ईश्वरः (योगसूत्र-1.24)। ईश्वर राग, द्वेष, क्रोध, लोभ, मोह आदि से रहित है, अतः विकार की कल्पना भी अयुक्त है। स्वामी जी ने एक प्रश्न उठाया है कि-ईश्वर रागी है या विरक्त। फिर समाधान किया है कि-दोनों में नहीं। क्योंकि राग अपने से भिन्न उत्तम पदार्थ में होता है, सो परमेश्वर से कोई पदार्थ पृथक् या उत्तम नहीं, इसलिए उसमें राग का सम्भव नहीं और जो प्राप्त को छोड़ देवे, उसको विरक्त कहते हैं। ईश्वर व्यापक होने से किसी पदार्थ को छोड़ ही नहीं सकता, इसलिए विरक्त भी नहीं। इसलिए ईश्वर को निर्विकार कहा गया है। राग, द्वेष आदि विकार हैं, पाप के हेतु हैं, जबकि ईश्वर तो अपापविद्ध है। वह निर्विकार इसलिए है कि उस चेतनमात्र अखण्डैकरस ब्रह्मस्वरूप में नाना वस्तुओं का मेल नहीं है-नेह नानास्ति किंचन (कठोपनिषद्-2.4.11) तथा वह पाप जरा, मृत्यु, शोक, क्षुधा, पिपासा से रहित है-य आत्मा अपहतपाम्मा विजरो विमृत्युर्विशोकोऽविजिधित्सोऽपिपासः सत्यसंकल्पः सोऽन्वेष्टव्यः (छान्दोग्योपनिषद्-8.7.1)।

8. अनादि विशेषण की वेदमूलकता

ईश्वर के अजन्मा, अनन्त और निर्विकार होने से उसका अनादित्व भी सिद्ध होता है। ईश्वर के अनादित्व में सबसे बड़ा वैदिक प्रमाण तो यही है कि उसके आरम्भ का एक भी प्रसंग वेद में नहीं है। उसकी अपने आप में सत्ता है, इसीलिए उसे स्वयम्भू कहा गया है। स्वयम्भू का अर्थ है-सनातन स्वयंसिद्ध। वेद कहता है-अकामो धीरो अमृतः स्वयंभूः रसेन तृप्तो न कुतश्चनोन (अथर्ववेद-10.8.12)। अनादि शब्द का अर्थ है-न विद्यते आदिः कारणं यस्य सोऽनादिरीश्वरः। वह अपना आत्मा आप ही है-स य एषोणिमैतदात्म्यमिंद सर्व तत्सत्यं स आत्मा (छान्दोग्योपनिषद्-6.8.7)।

9. अनुपम विशेषण की वेदमूलकता

दो पदार्थों में साधर्म्य होने पर उपमा होती है। किन्तु ईश्वर का साधर्म्य अर्थात् वाच्य सादृश्य संसार में है ही नहीं। ब्रह्माण्ड में कोई भी तत्व ऐसा नहीं है, जो ईश्वर कर्ता उपमान बन सके। उपमा सान्त की अपने से उत्तम पदार्थ से होती है, ईश्वर तो अनन्त है। अतः अनन्त की सान्त से उपमा अयुक्त है। वेद के अधिकांश मन्त्रों में ईश्वर के अनुपम स्वरूप का ही विवरण है। संसार में कोई दूसरा पदार्थ ऐसा नहीं है जो सत्, चित् व आनन्द भी हो। ईश्वर को समझाने के लिए वाक् का आश्रय लेना पड़ता है, जबकि उसका सम्पूर्ण स्वरूप वाक् का विषय नहीं है-नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया न बहुना श्रुतेन (मुण्डकोपनिषद्-2.3)। ईश्वर की अनुपमता का इससे बढ़कर उदाहरण क्या होगा कि-हाथ नहीं पर अपनी शक्ति से सबकी रचना करता है, पैर नहीं पर सबसे अधिक वेगवान्, बिना आँख, कान के वह कुछ देखता व सुनता है, और तो और उसको अवधि सहित जानने वाला कोई भी नहीं है-अपाणिपादो जवनो ग्रहीता पश्यत्यचक्षुः स शृणोत्यकर्णः। स वेत्ति विश्वं न च तस्यास्ति वेता तमाहुरग्र्यं पुरुषं पुराणम्। (श्वेताश्वतरोपनिषद-3.17)।

10. सर्वाधार विशेषण की वेदमूलकता

ब्रह्माण्ड में सूर्य, चन्द्र, पृथिवी आदि लोक अपनी अपनी परिधि में घूम रहे हैं। क्या ये ग्रह अपने आप ही बिना कारण के यूँ ही घूम रहे हैं या इनका कोई आधार है। वेद इसका समाधान करता है कि-या गोर्वर्त्तनिं पर्येति निष्कृतं पयो दुहाना व्रतनीरवारतः (ऋग्वेद-10.65.6), ये गौ (लोक) अपने अपने मार्ग में घूमते हैं और पृथिवी अपनी कक्षा में सूर्य के चारों ओर घूमती है अर्थात् परमेश्वर ने जिस जिसके घूमने के लिए जो मार्ग निष्कृत अर्थात् निश्चय किया है, उस उस मार्ग में सब लोक घूमते हैं। पुनः ऋग्वेद (7.12.27) से स्पष्ट किया है कि-यदा ते हर्यता हरी वावृधाते दिवे दिवे। आदित्ते विश्वा भुवनानि येमिरे। ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका (आकर्षणानुकर्षण) में यह भाषार्थ दिया गया है-हे इन्द्र परमेश्वर, आपके अनन्त बल और पराक्रम गुणों से सब संसार का धारण, आकर्षण और पालन होता है। आपके ही सब गुण सूर्यादि लोकों को धारण करते हैं। **(क्रमशः)**

आर्य मान्यताओं के पुनः संस्थापक-महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

ले.-कृष्ण चन्द्र गर्ग 831, सैक्टर 10 पंचकूला (हरियाणा)

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन में अन्दर बाहर सत्य और सात्त्विकता ओतप्रोत थी। वे हर प्रकार के आडम्बर से परे थे। लोकोपकार उनका एकमात्र लक्ष्य था। परमात्मा ने उन्हें बुद्धिबल और नैतिक बल गजब का दिया था। उन्होंने समाज की स्थिति का तथा पुस्तकों का स्वाध्याय खूब किया था। उनकी स्मरण शक्ति कमाल की थी। व्याख्यान वे सरल और स्पष्ट भाषा में दिया करते थे। उनकी शैली मधुर और तर्कपूर्ण होती थी। उन्होंने सोई हुई हिन्दू जाति को जगाया। उसके खोए हुए गौरव को वापिस दिलाया। उसकी कायरता, अज्ञानता, भीरुता और अन्धविश्वास को धोया।

महर्षि दयानन्द ने डंके की चोट से ऐलान किया कि आर्य लोग जो आजकल हिन्दू कहलाते हैं, भारतवर्ष के ही मूल निवासी हैं। इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि आर्य भारत में कहीं बाहर से आए थे। आर्यों का संस्कृत भाषा, साहित्य ही संसार में सबसे पुराना साहित्य है। संस्कृत के किसी ग्रन्थ में नहीं लिखा कि आर्य भारतवर्ष में कहीं बाहर से आकर बसे थे। इस देश का सबसे पहला नाम आर्यावर्त्त था अर्थात् आर्यों का देश। उससे पहले इसका कोई और नाम न था। इस प्रकार उन्होंने हिन्दुओं के मनोबलों को बढ़ाया।

स्वामी जी हिन्दुओं की सभी कमियों और कमजोरियों के लिए पुराणों को जिम्मेदार मानते थे। वे पुराणों को महर्षि वेद व्यास जी की रचना नहीं मानते थे। वे लिखते हैं "जो अठारह पुराणों के कर्त्ता व्यास जी होते तो उनमें गपौड़े न होते क्योंकि शारीरिक सूत्र, योगदर्शन के भाष्य आदि व्यास जी कृत ग्रन्थों को देखने से पता लगता है कि वे बड़े विद्वान्, सत्यवादी, धार्मिक, योगी थे। वे ऐसी झूठी बातें कभी न लिखते जैसी पुराणों में हैं।"

स्वामी जी मूर्तिपूजा को भारत के सारे अनिष्टों का मूल मानते थे। पुराणों ने ही मूर्तिपूजा को प्रोत्साहित किया और आर्यत्व की कब्र खोद दी। अवतारवाद, जन्म पर आधारित जाति-प्रथा, सती प्रथा, विधवा विवाह का निषेध आदि, अनेक ऐसी कुरीतियां जिनके कारण हिन्दू बदनाम है, सबको पुराणों में मान्यता प्राप्त है। पुराणों की ऐसी मान्यताएं वेद विरुद्ध हैं। यदि पुराण और पौराणिक विचार हिन्दुओं में न होते तो ईसाईयों और मुसलमानों को हिन्दुओं के विरोध में कहने को कुछ भी न मिल पाता और न ही हिन्दू इतनी आसानी से मुसलमान और ईसाई बनते।

महर्षि दयानन्द सत्य के प्रबल पक्षधर थे। आर्य समाज के दस नियमों में चौथा नियम उन्होंने दिया-सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। वे मानते थे कि मनुष्य का आत्मा सत्य-असत्य को जानने वाला है। परन्तु पण्डित लोग अपनी प्रतिष्ठा, हानि और निन्दा के भय से सत्य को प्रकट नहीं करते। उन्होंने 'स्वमन्तव्या-मन्तव्यप्रकाश' में उपनिषद् का निम्न श्लोक उद्धृत किया है-

न हि सत्यात्परो धर्मो नानृतात्पातकं परम्।
न हि सत्यात्परं ज्ञानं तस्मात्सत्यं समाचरेत्।

अर्थात् सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं है, झूठ से बढ़कर कोई पाप नहीं है और सत्य से बढ़कर कोई ज्ञान नहीं है। इसलिए सत्य का आचरण करें।

महर्षि दयानन्द दिखावे के बाहरी चिन्हों को धर्म से नहीं जोड़ते थे। वे जब किसी को रुद्राक्ष पहने देखते थे तो उससे कहा करते थे कि इन गुठलियों के पहनने से क्या लाभ है। इससे मुक्ति नहीं होती। मुक्ति तो ज्ञान से होती है। मनुस्मृति में भी कहा गया है-न लिंङ्गं धर्म कारणम् अर्थात् बाहरी चिन्हों से व्यक्ति धार्मिक नहीं बनता। धार्मिक तो शुभ आचरण से बनता है। महर्षि मनु ने कहा-आचारः परमो धर्मः।

महर्षि दयानन्द मानते थे कि हमारा नाम आर्य है, हिन्दू नहीं। आर्य का अर्थ है श्रेष्ठ पुरुष। अरब के लोग काफिर और दुष्ट को हिन्दू कहते हैं। विदेशी मुसलमानों ने हमें हिन्दू नाम दिया है।

स्वामी जी श्री कृष्ण जी को एक महापुरुष मानते थे। सत्यार्थप्रकाश में वे लिखते हैं "देखो! श्री कृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अति उत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र धर्मात्माओं के समान है। जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्री कृष्ण जी ने जन्म से मृत्यु तक बुरा काम कुछ भी किया हो, ऐसा नहीं लिखा और इस भागवत वाले ने अनुचित मनमाने दोष लगाए हैं। दूध, दही, मक्खन आदि की चोरी, कुब्जा दासी से सम्भोग, परस्त्रियों से रासमण्डल, क्रीड़ा आदि झूठे दोष श्री कृष्ण जी पर लगाए हैं। इसको पढ़-पढ़ा, सुन-सुना के अन्य मत वाले श्री कृष्ण जी की बहुत सी निन्दा करते हैं। जो यह भागवत न होता तो श्री कृष्ण जी जैसे महात्माओं की झूठी निन्दा क्यों कर होती।"

महर्षि दयानन्द ने राष्ट्रीय स्वाभिमान को जगाया, विशुद्ध भारतीयता पर बल दिया। सत्य, असत्य विवेक की प्रवृति को जगाया, बुद्धिवाद को बढ़ावा दिया, अन्धविश्वास और रूढ़िवाद का खण्डन किया।

स्वामी जी का दरबार मित्र, शत्रु सबके लिए खुला था। वे सबके साथ प्रेम से बर्ताव करते थे। परन्तु यदि कोई उनके साथ दुष्टता का व्यवहार करने लगता तो वे रुद्ररूप धारण करके उसे दण्ड देने को तैयार हो जाते थे।

सन् 1873 में कलकत्ता में स्वामी जी अपने व्याख्यानों में कहा करते थे कि जब तक वेद न पढ़ाए जायें, संस्कृत की शिक्षा से कोई लाभ नहीं। पुराणों की बुरी शिक्षा से लोग व्यभिचारी हो जाते हैं और जो विचारशील हैं वे धर्म से पतित होकर हानिकारक बन जाते हैं।

स्वामी जी कहते थे कि पत्थरों को पूजने से पण्डितों की बुद्धि पत्थर हो गई है। इस कारण से वे सत्य-सिद्धान्तों को समझाने में असमर्थ हैं। मैं उनकी जड़पूजा छुड़वाकर उनकी बुद्धि को निर्मल करने का प्रयत्न कर रहा हूँ। वे यह भी कहते थे "मेरा काम लोगों के मनमन्दिरों से मूर्तियां निकलवाना है, ईट-पत्थर के मन्दिरों को तोड़ना-फोड़ना नहीं है।

सन् 1874 में मुम्बई में अनेक अंग्रेज कर्मचारी स्वामी जी से मिलने और उनके व्याख्यान सुनने आया करते थे और उनकी प्रशंसा करते थे। स्वामी जी अंग्रेजी राज्य की बहुत प्रशंसा किया करते थे। इसी कारण वे बहुत से लोग उन्हें अंग्रेजों का गुप्तचर कह दिया करते थे। 1874 में नासिक में स्वामी जी ने यह भी कहा कि भारत में सही अर्थों में अंग्रेज ही ब्राह्मण हैं।

सन् 1878 में अजमेर में राय बहादुर श्याम सुन्दर लाल ने स्वामी जी से कहा कि आप मूर्तिपूजा पर इतना तीव्र आक्रमण क्यों करते हैं, उसे थोड़ा नम्र कर देने से भी तो काम चल सकता है। स्वामी जी ने उत्तर दिया-मूर्तिपूजा पर मृदु आक्रमण करने व उससे किसी प्रकार की सन्धि करने से हमारे सिद्धान्तों की भी वही दशा होगी जो अन्य सिद्धान्तों की हुई है और कुछ समय के बाद आर्य समाज पौराणिक होकर हिन्दुओं में मिल जाएगा।

सन् 1879 में दानापुर में एक दिन एक सज्जन ने स्वामी जी से कहा कि आप इस्लाम के विरुद्ध न कहा करें। उस समय तो स्वामी जी ने कोई उत्तर न दिया। परन्तु सायंकाल को जो व्याख्यान दिया। वह आदि से अन्त तक इस्लाम के सिद्धान्तों पर ही था जिसमें उनकी तीव्र समालोचना की। व्याख्यान का आरम्भ ही इन शब्दों से किया कि मुझे कहा गया है कि मुसलमानी मत का खण्डन मत करो, परन्तु मैं सत्य को छिपा नहीं सकता। जब मुसलमानों की चलती थी तब वे हम लोगों का तलवार से खण्डन करते थे। अब यह अन्धेर देखो कि मुझे उनका जिह्वा मात्र से खण्डन करने से मना करते हैं। मैं ऐसा अच्छा राज्य पाकर भला किसी की पोल खोलने से कभी रुक सकता हूँ। (क्रमशः)

पृष्ठ 2 का शेष-वैदिक धर्म ही क्यों?

किस-किस प्रयोजन के लिए रचे हैं और इन दोनों में भी ईश्वर का प्रतिपादन है वही प्रधान है। इतना ही नहीं उन्होंने तो विज्ञान के अध्ययन-अध्यापन का क्रम भी वेद भाष्य में जगह-जगह बता दिया है। उनके अनुसार विज्ञान के अध्ययन का क्रम इस प्रकार रहे-वायु, ताप, प्रकाश, विद्युत, ध्वनि, चुम्बकत्व रसायन शास्त्र भौतिक और पदार्थ। सृष्टि उत्पत्ति के विषय में ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 72 व 129 अथर्ववेद काण्ड 8 सूक्त 9 तैत्तिरीय उपनिषद, बृहदारण्यक उपनिषद में जो वर्णन हुआ है वह विज्ञान के अनुरूप ही है।

उपनिषद में कहा गया है, '**सो कामयत बहुस्या प्रजाये येति स तपो तप्यत्। स तपस्तत्वा इदम् सर्वमसृजत यदिद किचं तत् सृष्टवात देवानुप्रविशत्। तदनु प्रविश्य सच्च नयच्चा भवत्। निरूक्तं चानिरूक्तं च। निलयम नंचानिलम। विज्ञानं चाविज्ञानं च। सत्यंचा नृतम् च। सत्यं भवत्। यदिद किञ्च तत्सत्य मित्याचक्षते।**

उस परमात्मा ने कल्पना की कि मैं एक हूँ। एक से अनेक हो जाऊं। उसने तप किया! तप के प्रभाव से ताप उत्पन्न हुआ और उससे सृष्टि रची गई। सबकी सृष्टि करके वह भी सृष्टि में अनुप्रविष्ट हो गया। प्रारम्भ में दो विपरीत कण बने। कोई भी कण अपने विपरीत कण के बिना नहीं था। व्यक्त अव्यक्त, निलयन-अनिलयन, निरूक्तम्-अनिरूक्तम्, सत्यम्-अनृतम् आदि। इस प्रकार अव्यक्त प्रकृति से व्यक्त सृष्टि का निर्माण हो गया। सृष्टि की उत्पत्ति का क्रम भी वैज्ञानिक है! ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसो अध्यजायत। अर्थात् ईश्वरीय नियम एवं अव्यक्त प्रकृति से ताप के कारण सृष्टि की उत्पत्ति हुई है।

वेद की मान्यता के अनुसार पृथ्वी गोल है इसीलिए इसका वर्णन करने वाले विषय को भूगोल कहते हैं। सम्पूर्ण विश्व भी गोल है इसीलिए उसे ब्रह्माण्ड भी कहते है। आयं गौः प्रश्निर क्रमीद् मातरं पुर। पितरं च प्रयन्त्स्वः। अर्थात् पृथ्वी गोल है, वह सूर्य से निकलती है और उसकी परिक्रमा करती है। पृथ्वी अपने अक्ष पर झुकी हुई है इसे ऋ. 1.37.8 में इस प्रकार कहा है-गृहस्थी का भार उठाते-उठाते वृद्धावस्था में जैसे गृहस्थी की कमर झुक जाती है ऐसे ही पृथ्वी अपने अक्ष पर झुकी हुई है। सृष्टि में सभी आकाशीय पिण्ड गुरूत्वाकर्षण के कारण ही टिके हुए हैं इसे यजु. 33.43 में बताया गया है।

वेदों में किसी भी प्रकार के अन्ध विश्वास के लिए कोई स्थान नहीं है। वेद में भूत शब्द प्राणी अथवा व्यतीत हुए समय के लिए ही आया है। मृतक शरीर को प्रेत कहते हैं। वेद में विश्व कुटुम्बकम् की भावना है। वैदिक धर्म में सभी प्राणियों के लिए सुख और शान्ति की कामना की जाती है।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःख भाग भवेत्।

सभी प्राणी सुखी हों, सभी निरोग हों, सभी भद्र दृष्टि से देखने वाले हों तथा किसी को भी कोई दुःख न हो। वेद हमें निडर होकर रहने की शिक्षा देता है।

अभयंमित्रादभयमित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात्।

अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम् मित्रम् भवन्तु।।

अथर्व. 19.5.6

अर्थात् हम मित्र से, शत्रु से, ज्ञात और अज्ञात पदार्थों से अभय हों। हमें रात्रि में भी अभय और दिन में भी अभय होना है। सब दिशाओं में हमारे मित्र हों। वेद हमें पुरूषार्थी बनाता है-उद्यानं ते पुरूष नावयानं जीवातुं ते दक्षतातिं कृणोमि। अथर्व. 8.1.6 हे पुरूष। तेरी सदैव उन्नति हो अवनति न हो तेरे जीवन के लिए दक्षता का बल देता हूँ।

वैदिक साहित्य में धर्म को ठीक से परिभाषित भी किया है।

चोदना लक्षणोऽर्थो धर्मः।

मीमांसा 1.1.2

यतोऽभ्युदय निश्रेयस सिद्धिः स धर्म।

वैशे. दर्शन 1.1.2

सत्यम् ब्रूयात् प्रियम् ब्रूयात् ब्रूयात्सत्यमप्रियम्।

प्रियं चानृतं ब्रूयात् एष धर्म सनातन।

धारणाद्धर्म मित्याहु धर्मो धारयेते प्रजा।। महाभारत।

पृष्ठ 4 का शेष-नदिया कैसे उतरें पार

ज्ञान चक्षु से खोल लिया अथवा नहीं? वरना नौका भवसागर से पार नहीं लगा पाएगी। अतः सवार होने से पूर्व इस तथ्य को भलीभांति सुनिश्चित कर लेना चाहिए तभी नौका आगे बढ़ाएं। वरना 'फिर पछताए होत क्या, जब चिड़ियां चुग गईं खेत।'

6. एक बात और भी ध्यातव्य है कि कभी-कभी अज्ञानवश लोभ में आकर नाविक सीमा, सामर्थ्य से अधिक सवारियां बिठा ले तो भी नौका डूबने का भय बना रहता है। जिससे व्यक्ति नदी, सागर के पार नहीं पहुंच सकता।

कभी-कभी नौका पुरानी या टूटी-फूटी होने से मंझधार में ही पानी भर जाने से डूबने का खतरा उत्पन्न हो जाता है।

यदि नाविक कुशल न हो तो भी नौका लक्ष्य पर पहुंच जायगी, इसमें सन्देह बना रहता है। अतः नाविक ऐसा होना चाहिए जो पार लगा सके। अतः प्रभु से प्रार्थना करनी चाहिए-

नदिया गहरी नाव पुरानी डर लागे मंझधार।

प्रभु जी तुम्हीं हो खेवनहार, लगा दो नैया पार।।

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/-रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/-रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा।

व्यवस्थापक आर्य मर्यादा

गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

(नैक द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त एवं यू.जी.सी. एक्ट 1956 के सेक्शन-3 के अन्तर्गत समविश्वविद्यालय)

प्रवेश सूचना - I (सत्र 2020-21)

निम्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु ऑनलाइन/ऑफलाइन आवेदन पत्र आमंत्रित किये जाते हैं :-

1. एम.एस-सी. •भौतिकी •गणित •रसायन विज्ञान •माइक्रोबायोलॉजी •पर्यावरण विज्ञान 2. एम.सी.ए. 3. बी.फार्म. 4. बी.फार्म. द्वितीय वर्ष (लेटरल एन्ट्री) 5. एम.पी.एड. 6. बी.पी.एड. 7. बी.एस-सी. (गणित/बायो वर्ग) 8. बी.ए. 9. बी.ए. ऑनर्स (वेदालंकार/विद्यालंकार) 10. बी.पी.ई.एस. 11. एम.ए. •वेद •संस्कृत •हिन्दी •दर्शन •योग विज्ञान •मनोविज्ञान •अंग्रेजी •प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व •ज्योतिर्विज्ञान एवं वैदिक कर्मकाण्ड 12. पी.जी. डिप्लोमा •योग विज्ञान •हिन्दी पत्रकारिता 13. डिप्लोमा •डी. फार्म. •वैदिक पौरोहित्य (कर्मकाण्ड) 14. सर्टिफिकेट कोर्स : •योग •द आर्ट आफ हैप्पीनेस •सेल्स मैनेजमेन्ट 15. एम.बी.ए./एम.बी.ए. (बी.एफ.)/ एम.बी.ए. (बी.ई.) 16. बी.बी.ए. 17. बी.टेक./बी.टेक. द्वितीय वर्ष (लेटरल एन्ट्री) 18. पी-एच.डी.

• आवेदन पत्र व विवरण पत्रिका निर्धारित शुल्क नकद अथवा कुलसचिव, गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के पक्ष में देय डिमाण्ड ड्राफ्ट के द्वारा जमा कर कुलसचिव कार्यालय से प्राप्त किये जा सकते हैं। ऑनलाइन/वेबसाइट से डाउनलोड किये गये आवेदन पत्र निर्धारित शुल्क के साथ स्वीकार्य होंगे।

• प्रवेश प्रक्रिया एवं अन्य विस्तृत जानकारियां विवरण पत्रिका/वेबसाइट पर उपलब्ध हैं।

आवेदन पत्र जमा करने की अन्तिम तिथि

• एम.एस-सी./एम.सी.ए./एम.ए./पी.जी. डिप्लोमा/बी.पी.एड./एम.पी.एड : 15 जुलाई 2020

• बी.ए./बी.ए. ऑनर्स/बी.एस-सी./बी.फार्म./बी.पी.ई.एस./डिप्लोमा/सर्टिफिकेट : 10 अगस्त 2020

वेबसाइट : www.gkv.ac.in कुलसचिव

@gkvharidwar @gkvsocial #gkv_hdr

श्री विजय आर्य जी प्रधान आर्य समाज राजपुरा अपने निवास स्थान पर यज्ञ करते हुए। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अन्तरंग सदस्य श्री मनोज आर्य जी फिरोजपुर में अपने निवास स्थान पर यज्ञ करते हुये। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अन्तरंग सदस्य श्री सोहन लाल जी सेठ अपने परिवार सहित घर में यज्ञ करते हुए।

श्री अश्विनी मोंगा जी अन्तरंग सदस्य आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब अपने निवास स्थान पर यज्ञ करते हुए। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मंत्री श्री रणजीत आर्य जी अपने निवास स्थान पर यज्ञ करते हुये। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अन्तरंग सदस्य श्री श्याम लाल आर्य बंगा में अपने परिवार सहित घर में यज्ञ करते हुए।

आर्य समाज बस्ती बाबा खेल जालन्धर के मंत्री श्री निर्मल आर्य अपने निवास स्थान पर यज्ञ करते हुए। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अन्तरंग सदस्य श्री यशपाल वालिया जी होशियारपुर में अपने निवास स्थान पर यज्ञ करते हुये। आर्य समाज गौशाला रोड के प्रधान श्री कैलाश नाथ जी भारद्वाज एवं उनकी धर्मपत्नी डा. सरला भारद्वाज जी अपने निवास स्थान पर यज्ञ करते हुये। आर्य समाज तलवाड़ा के सदस्य श्री परमानन्द जी एवं श्री अरुण कुमार जी अपने परिवार सहित यज्ञ करते हुये।

स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की तरफ से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक प्रेम भारद्वाज द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर पंजाब से मुद्रित एवं गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से प्रकाशित। सम्पादक–प्रेम भारद्वाज
पीआरबी एक्ट के तहत प्रकाशित सामग्री के चयन हेतु उत्तरदायी किसी विवाद का न्यायिक क्षेत्र जालन्धर होगा। आर एन आई संख्या 26281/74 **E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org**